SHREE SWAMINARAYAN

શ્રી સ્વામિનારાયણ

FEBRUARY 2005



AUSTRALIA



NEW ZEALAND

LOS ANGELES

Publisher:-
Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1

પ્રકાશક:-
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧





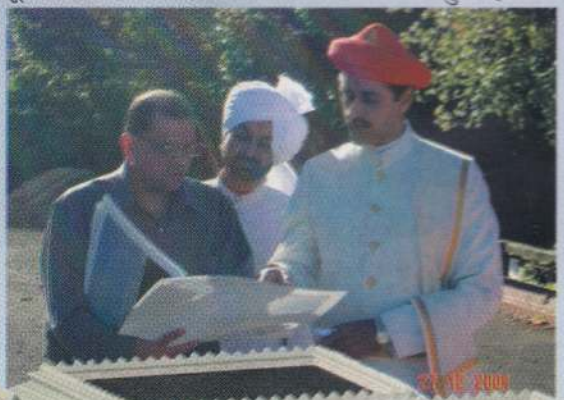
सीडनी मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर
र शोभायात्रा में हरिभक्त तन्मय होकर
ाचते हुए ।

सीडनी शहर में शोभायात्रा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ मुख्य यजमान
प.भ. देवगजभाई हालारीया लाभ लेते हुए ।





लोस एंजल L.A. मंदिर में पाटोत्सव में आयोजीत महापूजा में लाभ लेते हरिभक्त और कीर्तन करते युवा हरिभक्त ।



प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल प.पू. महाराजश्री को ओकलेन्ड
मंदिरकी जानकारी देते हुए ।

सूचीत मंदिर, ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड)



श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ४ फरवरी -२००५



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स
०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश $ 100
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	अमृत का आचमन	५
४.	श्री नरनारायणदेव स्वयं श्रीहरि	६
५.	लोभ के वश आज्ञा का उल्लंघन बडे अनर्थ का कारण होता हैं	७
६.	कर्म का रहस्य	८
७.	एकादशी व्रतकी महिमा और उत्पत्ति	१०
८.	वैदिक ग्रंन्थों में विश्व कल्याण की भावना	११
९.	श्री स्वामिनारायण भगवान अंतकाल में लेने अवश्य आते हैं	१२
१०.	कीर्तन भक्ति	१४
११.	मैं और मेरा	१५
१२.	कपटी ने कपट किया	१७
१३.	सत्संग बालवाटिका (१) सर्वोत्तम दवा शिक्षापत्री	१८
१४.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायणने इस जगत में अपने दिव्यस्वस्म का ज्ञान देने के लिए "वसंतऋतु" को पसंदकरके शिक्षापत्री जैसा महान ग्रन्थ जगत के मुमुक्षुओं के लिए अपने ही वाङ्मय को अपने स्वस्म में दिया है । ऐसे इस शीतलशांत वातावरण को ही मोक्ष की साधना में भारतीय मनुष्यों नें भी इसे इष्ट मानलिया है ऐसा स्पष्ट हो रहा है । जिस सुहाने अवशर को अर्थात् वसन्त की ऋतु में भगवान श्री कृष्ण ने भी स्वीकार करके मार्गशीर्ष मास की एकादशी को गीता का उपदेश करने हेतु स्वीकार किया है । "मासानां मार्गशीर्षोऽहम्" इस उक्ति द्वारा मार्गशीर्ष को अपना दिव्य स्वस्म माना है । धनुर्मास की पवित्रता तथा ब्राह्ममुहूर्त में कडकडाती ठंडी में प्रातः हम सभी मिलकर परम्परा से चली आ रही श्रीहरि के षडाक्षरी नाम की धुनि करते हैं । जिससे अन्दर के अज्ञान को ज्ञानस्मी प्रकाश मिलने से सार्वत्रिक विकाश एवं सुन्दर भाव तथा श्रद्धा अपने दिलदिमाग पर समा जाती है । इस श्रद्धा तथा भावना को अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण पूर्ण करते हैं भविष्य में भी पूर्ण करेंगे ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

– *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जनवरी - २००५

७ अमेरिका एवं सिडनी (ओस्ट्रेलीया) में मूर्ति प्रतिष्ठा करके पर्थ एवं ओकलेन्ड से स्वदेश आगमन ।

८ धमासणा गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. लालभाई शंकरभाई पटेल (निवृत्त सदस्य) के यहाँ पदार्पण ।

९ नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव पर पदार्पण ।

१० वचनामृत शतामृत पारायण पूर्णाहुति प्रंसग पर पदार्पण, डी. के. होल, नारणपुरा ।
प.भ. पटेल गौतमभाई के यहाँ होमात्मक महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, नवरंगपुरा ।

११ असलाली श्री स्वामिनारायण मंदिर में पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।

१२ लीलापुर (मूलीदेश ता. लखतर) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१४ अमदावाद मंदिर में धनुर्मास धुनि की पूणाुहुति स्व वरद हाथों सें ।
अनुराग रेसीडेन्स स्कीम की खात विधि प्रसंग पर पदार्पण, मेमनगर ।
घाटलोडिया हीराबाग में एक हरिभक्त के यहाँ पदार्पण ।
प.भ. नटवरलाल धनजीभाई मिस्त्री के यहाँ पदार्पण, दरियापुर ।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर में मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में विजय स्तंभ स्थापन विधि तथा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । महादेव रतनपुरा गुरुकुल में महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर सुखदर (ता. हळवद मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१७ इन्द्रपुरा गाँव में हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण वहाँ से माणकपुर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१८ से २० फोटकी (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु पदार्पण ।

२१ श्रीराम स्टेट में पदार्पण ओढव, धर्मेश ज्वेलर्स के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, ध्रांगध्रा गुरुकुल ।
प.भ. बाबुभाई शिवलाल ठक्कर के नये मकान में पदार्पण, पालडी ।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप शाकोत्सव प्रसंग पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण, बापुनगर ।
श्री कमलेशभाई देवचन्द्रभाई पटेल के लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण, बापूनगर ।
जय गणेश ट्रेडर्स" दुकान के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, चांदखेडा ।
प.भ. मनोजभाई धुणाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, रामीप ।

२४ श्री स्वामिनारायण संस्कारधाम चराडवा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२५-२६ अंबाजी हीरा लक्ष्मी सरस्वती सदन में आयोजित सत्संग युवा शिबिर में पदार्पण ।

२७ श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर जमियतपुरा प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२८ समौ (ता माणसा) श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. घनश्यामभाई गणेशभाई पटेल (विहारवाळा) के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।

३० श्री स्वामिनारायण गुरुकुल हाथीजण मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. बलवंतभाई भरतभाई के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण, अमराईवाडी ।

३१ प.भ. पंकजभाई दयाराम ठक्कर के यहाँ वास्तुपूजन प्रसंग पर पदार्पण, सापावाडा (ता. इडर)
प.भ. मोहनभाई अमीचंदभाई पटेल के यहाँ सत्संग समारोह पर पदार्पण ।

सभी सत्संगी को जरुरी सूचना

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्पष्टता पूर्वक अपने सभी आश्रितो को आज्ञा की है की अपनी आमदनी का दशवा भाग अपने देश विभाग के आधार पर अपने देश विभाग के देव को अर्पण करना चाहिए ।

केवल संस्थाये, गुरुकुल या मंदिरो का निर्माण तथा किसी भी स्थान में दान करना हो तो धर्मादा में कमी करके दान नही देना चाहिए । अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी के आश्रितोको श्री नरनारायणदेव के कोठार में ही अपना धर्मादा (रुपया, अनाज इत्यादि) जमा कर प्राप्ती रशीद जरुर से प्राप्त करले ।

सर्वावतारी श्रीहरि की ईच्छा से अपना संप्रदाय देश विदेश में बहुत विस्तृत और व्यापक बनता जा रहा है । दाताओ कई बार कहाँ दान देना वो पता नही रहेता इसलिए दान का प्रवाह दूसरी संस्था की तरफ मुड गया है । इसलिए दाताओ को सूचन है की दान के लिए योग्य मार्गदर्शन प.पू. आचार्य महाराजश्री के पास से प्राप्त कर योग्य जरुरत वाले मंदिर, संस्था, गुरुकुल इत्यादि को मिले ।

उपनयन संस्कारोत्सव

संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीका उपनयन संस्कार (यज्ञोपवित) दि. ११-५-०५ को धामधूम पूर्वक किया जायेगा ।

अमृत का आचमन

– गोरधनभाई वी. सीतापरा

धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री स्वामिनारायण भगवान के अपर स्वरूप है, और सत्संगी के गुरु है । उनके मुख के आशीर्वचन यानि स्वयं भगवान के मुख के आशीर्वचन। ये कोई काल्पनिक मान्यता की बात नहीं है । नंदसंतो द्वारा लिखे हुए शास्त्रो के आधार पर हमने माना है । श्रीजी महाराज जैसे ही लोग श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित इस गद्दी पर बिराज शकते है !!!!

तो अब महाराज द्वारा स्थापित नरनारायणदेव पीठस्थान पर बिराजमान प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी के मुख कमल के थोडे अमृत वाक्यो का आचमन करते है । दि. १५-१-०५ एप्रोच मंदिर (बापुनगर) मूर्ति प्रतिष्ठा उपलक्ष्य में विजय स्तंभ स्थापन तथा शाकोत्सव के अवशर का प्रसंग है । हमे महाराज को प्रसंन्न करना है यही ध्येय है और रहेगा । लोया के शाकोत्सव में जो संकल्प हुआ वह चीज सब लेकर आये । कोई हल्दी, कोई, मरचा, धनिया और जीरा तो कोई घी, गुड जैसी जिसकी श्रध्धा वैसा सब लाये । महाराजश्री की चिंता बढ गई ! इसमें स्वाद कैसा आएगा फिर भी सभी लोगो का भाव पूर्ण करने के लिए जो आया वह शब्जी में डाला । स्वाद वाले को भी चिंता हुई की इसमें से क्या बनेगा ? क्योकि किसी को मीठा किसीको खट्टा तो किसीको तीखा पसंद होता है । पी.पी. स्वामीने बात की उस प्रकार जिसे जैसा स्वाद चाहिए था वैसा स्वाद महाराज के प्रताप से मिला ।

यह बात इसलिए की क्योकि सत्संग में भी यह बात लागू पडती है । जो जैसा संकल्प लेकर सत्संग में आते है वही भाव महाराज पूरा करते है । सत्संग में दिव्य भाववाले को हंमेशा सुख मिलता है । द्वेष भावना से आने वाले को दुःख मिलता है । अहोभाव लेकर आते है उनमे देव, आचार्य और संत सभी का गुण आता है । महाराज द्वारा बनाई हुई मर्यादा के मुताबिक वर्तन करे तो कायम सुखी रहता है ।

प्रारंभ आज से है । यह मात्र पैसा से नही, उत्सव शरीर से नही मनाया जाता, अंतर से मनाया जाता । और तब आनंद ही आता है महाराज विराजमान होने वाले है । शरीर तो आता है और जाता है । ५० पारायण हो या ५० शाकोत्सव फिर भी कुछ नही होता है । भगवान की एकही बात अर्जुन के मन में उतर गई ! उन्हो ने कितनी पारायण सुनी थी ? वचनामृत सत्संगीजीवन आदि का एक शब्द भी जीवन में उतर जाए तो भी जीव का कल्याण हो जाता है ।

यहाँ सत्संगी छोटी से छोटी सेवा में उपस्थित रहते है । षष्ठी पूर्ति महोत्सव हो या रजत स्वर्ण जयंती हो, गोबर लींपने की सेवा हो या दूसरी कोई भी सेवा हो, हम स्थल पर घूमते हुए सेवा देख कर खुश होते थे । यह सेवा भी महाराज ध्यान में रखते है । मेरे हरिभक्त सत्संग के लिए सेवा करते है । हंमेशा सेवा करते रहना । जितना सत्संग के लिए होगा वह अपनी ही धन संपत्ति है । शाकोत्सव में बैगन रोटी की महिमा नही है । प्रसाद की महिमा है । भगवान को अर्पित की गयी वस्तु का स्वाद भीन्न होता है । होटल का स्वाद भीन्न होता है । प्रसाद से अंतःकरण शुद्ध होता है । सभी का नरनारायणदेव मंगल करे ऐसी उनके चरणो में प्रार्थना । प्रतिष्ठा उत्सव निर्विघ्न हो ऐसी प्रार्थना ।

श्री नरनारायणदेव स्वयं श्रीहरि

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

श्रीजी महाराज के मुख से निकली दिव्य वाणी शिक्षापत्री तथा वचनामृत को वांचने से आनंद की अनुभूति होती है । भगवान पुरुषोत्तम नारायण हमें यथायोग्य समझ देकर पुलकित करते हैं । क्षणभर तो हमारी तरफ उनकी मूर्ति प्रत्यक्ष होजाती है।

हमारे पूर्वाचार्य श्रीहरि के अपर स्वरूप पूज्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजतो प्रति सभा में श्री नरनारायणदेव के यशोगान गाकर तद्रूप हो जाते है।

अहमदाबाद के ७वें वचनामृत एवं जेतलपुर के पांचवे वचनामृत वांचने के लिए महाराजश्री हम सभी को हर समय अनुरोध करते रहते हैं । यही हमारी भाग्य है । श्री नरनारायणदेव के प्रति पूज्य महाराजश्री का अनन्य अटूट भाव रहता है । श्री नरनारायणदेव की महत्ता सत्संगियों में तथा धर्मप्रेमियों में बढे सभी प्रभु के प्रति अनुरागी बनें सभी को



अलौकिक सुख तथा मोक्ष सुलभ हो इस भाव से अपनी षष्टि पूर्ति महोत्सव में "वचनामृत में नरनारायणदेव" इस नामकी अल्पकाय तथापि अंजनशलाकारूप पुस्तिका स्वयं स्वहाथों से लिखकर प्रकाशित करके समग्र जगत के मानवों को उपकृत किया है । श्रीजी महाराज आज भी नरनारायणदेव के रूप में विराजमान हैं । इस प्रकार अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति हमारे सामने प्रत्यक्ष विराजमान हैं । सभी के संकल्प को पूरा करते हैं । इस रहस्य को महाराजश्री समय-समय पर समझाते रहते हैं ।

जेतलपुर के पांचवे वचनामृत में श्रीजी महाराज कहते हैं : सभीजन सुनो आज तो हमें एक बात कहनी हैं - भगवान के भजने के सिवाय दूसरा कुछ नहीं है । हमारा किया कुछ नहीं होता लेकिन नरनारायणदेव का किया सबकुछ हो सकता है मेरे प्रताप से भी हो सकता है - मैं भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों को जानता हूं । हम बार-बार श्री

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १३

लोभ के वश आज्ञा का उल्लंघन बडे अनर्थ का कारण होता हैं

- जयंतिभाई के. सोनी (मेमनगर)

करोडो जन्म के पुण्य के प्रताप से हमें सत्संग में जन्म मिला हैं । सत्संग में हम पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण को प्राप्त किये हैं। किसी सत्ता या पद को नहीं । बडप्पन या सत्ता या पद की बात तो आज वर्तमान में आचार्य महाराजश्री के गादी अभिषेक के पवित्र प्रसंग को आंखो से देखे हैं । जिसका स्मरण चिरस्मरणीय बनजाता है । पूर्व आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने सर्वोपरि पद का स्वेच्छया परित्याग कर दिया और अपने पुत्र कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजको अर्पण कर दिया । इस प्रसंग पर उपस्थित प्रत्येक हरि भक्तों की आंखो मे आंसू आये विना नहीं रहा । यह कितना बड़ा त्याग है। कितनी बड़ी महानता है देश-विदेश में या अन्यत्र सभी जगहों पर यशो गाथा गाई जा रही है। ३५ वर्ष तक जिन्होंने इस स्थान के गौरव को बढाया है । सत्संगियों के हृदय सम्राट श्रीजी के प्यारे प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के त्याग की भावना सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के इतिसाह में या अन्यत्र दीपक लेकर खोजने पर भी नहीं मिलेगी । भगवान श्री स्वामिनारायण के बाद यह प्रथम प्रसंग है। ऐसे पद का त्याग करने से भगवान श्री नरनारायणदेव एवं भगवान श्री स्वामिनारायण कितना प्रसन्न हुए होंगे । इसका अन्दाज समाधिनिष्ठ योगी पुरुषकोही हो सकता है ।

इसमें से प्रेरणा लेकर हमभी आज से श्री नरनारायणदेव के चरणारविन्द में प्रार्थना करके निश्चित करें कि महाराज की मूर्ति ही अपनी सच्ची सम्पति है । मूर्ति में सभी प्रकार के सुख समाये हुए है । इसीलिए मूर्ति सर्वस्व है। सर्वोपरि है। इसीलिए उनकी आज्ञा भी सर्वोपरी है। भगवान अपने अक्षरधाम में दिव्य ऐश्वर्य पार्षद, दिव्य शक्ति से रहते है । वैसा यहाँ प्रत्यक्ष स्पष्ट होता है। इसलिये उस आज्ञा का लोप नहीं होना चाहिए । मनोनुकूल श्रीजी की आज्ञा में रहकर थोड़ी भी जो भजन-भक्ति करेंगे तो अवश्य महाराज की कृपा होगी ।

श्रीजी महाराज ने सं. १८८६ के वर्ष में विमारी का चरित्र किया । बिमारी के छ मास पूर्ण उदासीनता दर्शाये थे ।

किसी समय खाते तो किसी समय नहीं खाते । किसी को बुलाते तो किसी को नहीं बोलाते । बन में तप करते समय जैसे शरीर को सुखाया था वैसे इस समय शरीर को सुखा डाला । इस स्थ को देखकर स.गु. मुक्तानंद स्वामी तथा स.गु. गोपालानंद स्वामी इत्यादि स.गु.ने विचार किया कि श्रीजी महाराज इस लोक का त्याग करके निश्चित ही अक्षरधाम जायेंगे । इसमें कोई संदेह नहीं । ऐसा निश्चित करके साठ साधुओं को महाराज की सेवा में रखे । जिसमें से तीस साधु दिन की सेवा में रहते और तीस साधु रात्रि की सेवा में रहते । इसके अलावां कभी कभी साधु, ब्रह्मचारी, पार्षद तथा हरिभक्त महाराज की मन-वचन कर्म से सेवा करते । एक दिन महाराज को ऐसा विचार आया कि सभी लोग हमारी सेवा बहुत उत्तम करते हैं । रात-दिन नंगे पाँव खड़े रहते हैं । जैसे चन्द्र को चकोर पक्षी एकटक देखता रहता है ठीक वैसे ही मेरी तरफ देखकर सभी सेवा में उपस्थित रहते हैं । इस लिए इन संतो को सक्कर का लड्डू शेर-शेर का घी डालकर भोजन कराऊं ।

कर्म का रहस्य

- प्रो. महादेव धोरियाणी
(राजकोट)

आत्मनिरीक्षण द्वारा ही मन मलीनता का निवारण सम्भव है । हमें सदैव जड से निर्मूल करने का प्रयास करना चाहिए । दुष्कर्म को छोड़कर सद्‌गुणों का विकास ही मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए । पापमय जीवन का प्रारंभ दुर्जनो के सन्सर्ग से होता है । जब मनुष्य कुसंगति में पडता है तब उसकी बुद्धिभ्रष्ट होजाती है । सुसंस्कार मानवता के मूल को दृढ बनाता है।

जैसा कर्म वैसा न्याय । अर्थात् उसका शुभया अशुभ फल मिलता है । कर्म का फल तो मिलता ही है । इसमें से कोई बच ही नहीं सकता ।

"अवश्यमेव भोक्तव्य 'कृतं' कर्म शुभाशुभम्" बिचार अर्थात् कर्म, चिंतन करना ही कर्म है । कर्मयोगके साथ भक्तियोग एवं ज्ञानयोग का सुभग समन्वय होना जरुरी है ।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन" तुम्हे कर्म करना है फल के दाता हम है । कर्मनिष्ठा धर्मनिष्ठा पूर्वक होगी तो ही जीवन की भव्यता चमकेगी । कर्तव्य की बेदी पर कुर्बानी करने की प्रेरणा जो दे उसे कर्तव्य निष्ठा कहते हैं । कर्तव्य की उपेक्षा नहीं, कर्मफल की अपेक्षा नहीं, जीवन तो तितिक्षा मांगता हैं । जैसा कर्म वैसा फल । संत तुलसीदासजीने कहा है कि - "कर्म प्रधान विश्व करि राखा । जो जस करहिं सो तसफल चाखा " इस नियम के जानने वाले लोग इस प्रकार कहते हैं । "आज कसाई के घर कुशलता एवं धर्मी के घर चोरी । पूर्व के जन्म का फल जमा रहता है जिसका आगे के जन्म में फल चखने के लिए मिलता है ।

पुण्य और पाप की परिभाषा यह है परोपकार करना पुण्य है और दूसरे को पीडा देना ही पाप है । पुण्य से प्रभु प्रसन्न होते हैं । मैं करनेवाला हूँ यह वृथा अभिमान है । कारण कि सभी प्राणी अपने कर्म के बन्धन में बधे है । पाप यह अनिष्ट का परिणाम है, पुण्य यह सत्कर्म का परिणाम है । निष्क्रियता मृत्यु के समान है । सक्रियता जीवंत की निशानी है ।

मंणे छे देहमाटी मा, पण मानवीनुं
नाम जीवे छे ।
मरे छे मानवी पोते, पण मानवीनां
कामजीवे छे ॥

"भगवान कहते हैं कि, नियतं कुरु कर्मत्वम्" तूं नियत कर्म को कर । कर्तव्य की भावना से किया गया कर्म ही नियत कर्म है । हे अर्जुन ! तू उठ अपने कर्म में प्रवृत्त हो जा । भक्ति, कर्म, ज्ञान तथा योग के समन्वय से परमात्मा के दर्शन की प्राप्ति होती है । परमात्मा के प्रति श्रद्धा रखना कृतज्ञता है । उसी कार्य को करना कर्म योग है ।

मनुष्य कर्म किये विना एकक्षण भी नहीं रह सकता है । लेकिन यह कर्म बन्धन कारण नहो यह ध्यान देना आवश्यक है । अपना सत्कर्म प्रभु के प्रति होना चाहिए । यह सत्कर्म निष्काम तथा निःस्वार्थ होना चाहिए । सात्विक विचार वाला ही कर्म योगी हो सकता है ।

भोग निष्ठ लोग भोग प्राप्ति के लिए सत्कर्म की तरफ प्रेरित होते हैं । कितने तो डर वश सत्कर्म करते हैं । हमें अपना कर्म अंतर विकास के लिए करना चाहिए । सभी कर्म प्रभु में समर्पित कर देना जाहिए । यही श्रेष्ठ कर्म है । जीवन में उदारता, भव्यता, तेजस्विता एवं कारुण्य का प्रकाश ही आयेगा । गीताकार कहते हैं - कार्यकरो लेकिन आसक्त मत बनो । यही निष्काम कर्म है ।

जेवी करे छे करणी, तेवी तरत
फले छे ।
बदलो भलाबुरानो, अहींनो अहीं
मले छे ॥

कर्तव्य करने में दो मुख्य अवरोधक हैं । प्रथम लालसा दूसरी अहंकारवृत्ति । ए दोनों वृत्तियां इतनी तीव्र होती हैं कि कर्तव्य में से मनुष्य विचलित हो जाता है । सुख बाह्य

पदार्थो में नहीं मिलता उसके पीछे दौड़ना मूर्खता है ।

कर्म में दूसरा अवरोध है अहंकार। इसमें से वचने का एक मात्र उपाय है नम्रता । कर्म न करने का कारण आलस्य तथा प्रमाद है । आलसी मनुष्य निष्क्रिय हो जाता है जिस पर गीताकार कहते हैं - "शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेद कर्मणः ।" कर्म के अभाव में शरीर की क्रिया भी सम्भव नहीं है । शरीर क्रिया शली होतो मनबुद्धि भी सक्रिय रहती है । प्रमाद असावधानी में से उत्पन्न होता है । सावधानी से दूर होता है । कर्तव्य की भावना से कर्म किया जाय तो राग-द्वेष धीरे धीरे दूर हो जाता है । मन प्रसन्न हो जाता है । कर्म स्वयं आनंद का साधन बनजाता है ।

सृष्टि का सिद्धान्त है कि कार्य कारण के अनुस्म होता है । निष्क्रियता की अपेक्षा फल की आकांक्षा से किया गया कर्म उत्तम है । लेकिन कर्तव्य की भावना से किया गया कर्म उससे भी उत्तम है । कर्म जीवन में विकाश तथा शास्वत सुख प्राप्त करने का एक मात्र साधन है ।

कृपणाः फल हेतवः" फल की इच्छा से कर्म करने वाला कृपण होता है । कर्म आन्तरिक शक्ति को जगाने का एक मात्र साधन है ।

हे अर्जुन ! एक व्यक्ति द्वारा किया गया कर्म समष्टि पर पडता है । इसलिए समष्टि के लिए तुझे यहकर्म करना है । इस प्रकार की भावना यही अपने जीवन में आजाय तो अर्जुन की तरह हम भी कह सकते हैं कि -

"करिष्ये वचनंतव" आप की आज्ञा पालन करुँगा । इसलिए जो भी उत्तम काम करना है उसे विचार कर करना चाहिए । तुरन्त करना चाहिए । सत्कार्यो को धन की तरह गिन्ती करनी चाहिए । (१) कहे अधिक करे नहीं (२) जितना कहे उतना कर दिखाये (३) विना कहेजो करता रहे इन तीनों में से आप कौन है ?

दुःख की एक कारण यह भी है कि, हम मोह में पडजाते हैं, इस पर गीता कहती हैं - सतत कार्य करो लेकिन आसक्त मत बनों । जिसके लिए जीवात्मा विशेष चाहे उसके प्रति अनासक्त रहो । कर्म, भक्ति, ज्ञान तथा योग के सुभग समन्वय द्वारा परमात्मा का दर्शन होता है । आनंद प्राप्ति हेतु अनासक्त होना आवश्यक है ।

अपनी सुखसुविधाओं का परित्याग ही श्रेयष्कर है । आपकी एक ही विचार शरणी होनी चाहिए "प्रगति" । चैन से जीने के लिए चार रोटी तथा दो लगोटी काफी है । परेशानी से जीने के लिए चार कार दो बंगाला भी पर्याप्त नहीं है । अपने पास कितना है यह आवश्यक नहीं उसमें से हमारे लिए कितना यही सुख है ।

निवृत्ति में प्रवृत्ति

समग्र सत्संग जानता है कि अपने निवृत्त प.पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री अपने निवृत्तिकाल में सम्पूर्ण समय अपने शुभ संकल्प के समान संप्रदाय का अद्वितीय आयोजन "श्री स्वामिनारायण म्यूजियम" (नूतन निर्माणाधीन) के निर्माण तथा संचालन में व्यस्त रहेंगे । यह आयोजन जल्दी से प्रगति के मार्ग पर है ।

जिससे अब प.पू. बडे महाराजश्री श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के स्थल पर अपनी आफिस में विराजमान होंगे । प्रात :९-०० से ११-०० बजे तक वहाँ ही दर्शन करने का लाभ मिल सकता है ।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
टर्फ स्कूल के सामने, ए.इ.सी. नारायणपुरा के पीछे,
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ टीले फेक्स : २७४१९५९७

एकादशी व्रतकी महिमा और उत्पत्ति

- मनसुख बी. हिराणी (बलदिया - कच्छ)

एकादशी का व्रत बहुत पुण्यदायी है। सभी व्रत का राजा है. एकादशी का व्रत करने के बाद रामनवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्री, नरसिंह चौदश और वामन द्वादशी इस पांच जयंती व्रत करने के बाद और कोई भी व्रत करने की आवश्यकता नहीं रहती। समाज कितना ही व्रत करता है। कोई पीपल देव को पानी चढाकर तीन दिन का उपवास करता है या कोई पूनम का व्रत करता है। परंतु यह शास्त्र संमत नहीं है। शास्त्र में बस इतने ही व्रत हैं।

चौवीस एकादशी और पाँच जयंती व्रत। कुल संख्या उन्तीस है। वैष्णव किसे कहतें हैं। वीस और नव व्रत करता है। उनका नाम वैष्णव। उन्तीस व्रत करना शास्त्र की आज्ञा है। उसके बाद मन कल्पित व्रत करना ये तो उनका कोई अंत नहीं है। शास्त्र की मात्र आज्ञा मानेंगे तो भी सुखी रहेंगे। जो यह व्रत करता है उसके जीवन में कोई पाप रहता नहीं है। एकादशी व्रत की महिमा अनंत है। उसके जितने गुणगान गाएँ उतने कम है।

एकादशी व्रत का विधान क्या रामायण में भी है। एकादशी व्रतका विधान की कथा भागवत में भी है। एकादशी व्रत की कथा पुराणों में भी है। एकादशी तो प्राचीन व्रत है।

एकादशी एक देवी है। परमात्मा के स्वस्म में से उत्पन्न हुई है। 'नाडीजंघ असुर का पुत्र मुरदानव बहुत बलवान था। कोई के मारने से मरनेवाला वह नहीं था। उसे कोई देव-मनुज मार नहीं सकता था। भगवान विष्णु उसके सामने युद्ध करने गए। भगवान थक गए। दैत्य को कुछ हुआ नहीं। प्रभु भाग गए। उनके पीछे दैत्य पड गया। दौडते दौडते भगवान बद्रिनारायण नामक गहरी, अंधेरी, विशाल गुफामें जाकर सो गये। वह दैत्यभी पीछे-पीछे वहाँ पहुंच गया। प्रभु श्रमित हो गए थे। इसलिए उन्होंने अपनी ग्यारह इन्द्रियो में से एक को जागृत किया। उस शक्तिने नारी का स्म धारण किया। वह शक्ति स्त्री तलवार लेकर गुफा के द्वार पर खड़ी थी। तब मुस्दानव वहाँ आया तो उस कन्या को देखकर विष्णु भगवान को पकडने का ध्येय वह भूल गया। और कन्या से पूछा आप कौन है ? क्या आप विवाहित है। कन्याने कहा नहीं मैं कुवाँरी हूँ। विवाह करने की इच्छा है ? कन्याने कहा, परंतु मेरी प्रतिज्ञा है कि जो कोई मेरे सामने आयेगा उसे पहले मुझसे लडना होगा। और युद्ध में जो मुझे जीत पाए मैं उससे विवाह करुंगी। असुर को ऐसा हुआ कि एक कन्या को जीतने मे क्या कठिनाई है। चलो, तैयार हो जाओ। उस कन्या के हाथ में तलवार तैयार ही थी। तुरत ही असुर का शिर काट दिया। असुर का शिर गिरा। धरती काप उठी। भगवान जग गये। बाहर आये। उस कन्या से कहते है कि तुम कौन हो ? प्रभु, आपकी ग्याहर इन्द्रियो से मैं उत्पन्न हुई हूँ। मेरा नाप एकादशी है। मैं तपस्विनी हूँ। तप मुझे अच्छा लगता है। परंतु आपने तलवार हाथ में रखी हैं। वह फेंक दे। असुर मर गया हैं। अब तलवार क्यों रखी हैं ? प्रभु ! मुझे आज्ञा दीजिए इस तलवार से अब मैं पाप को मारुंगी। जो जो पुस्म मेरा व्रत करेगा उसके पाप का मैं नाश करुंगी। भगवानने कहा आज से लेके आपका व्रत सब लोग करेंगे। प्रभु ने बाद में एकादशी के साथ विवाह किया। चौबीस एकादशियों के अलग अलग नाम है। भगवान एकादशी पर प्रसन्न होकर अपनी आंख में उसको आश्रय दिया। इसलिए अवश्य एकादशी का व्रत करना चाहिए।

वैदिक ग्रंन्थों में विश्व कल्याण की भावना

- साधु प्रियव्रतदास (अहमदाबाद)

सनातन वैदिक आर्य संस्कृत की गरिमा अपने भारत देशमें वैदिक ग्रंथो में बड़ा महत्व है। आध्यात्मिक, भौतिक, आर्थिक आयुर्वेदिक तथा विशेषस्म से मानवता के आधार पर सुसंकृत का स्वाभिमान तथा गौरव है । सभी प्रकार का तत्व वेदों में विहित है । वेदो में ज्ञान विज्ञान का रहस्य भरा हुआ है। जगत के प्राचीन संस्कृति का अभ्यास वेदो में पूर्णतः भरा हुआ है ।

यजुर्वेद गर्जना करता है कि - "कृण्वन्तु विश्वं आर्याः" अर्थात् विश्व में फैली हुई मानवजाति को सच्चे अर्थ में सुसंस्कृत मानव बनाओ । अहो ! आश्चर्य हो रहा है कि वेदो में सुन्दर विश्व कल्याण की भावना समाहित है। सनातन वैदिक धर्म के विषय में किसी प्रकार शंका का स्थान नहीं है। वैदिक धर्म के प्रणेता परम सत्य परमेश्वर श्रीकृष्ण हैं । इसीलिए वेद भगवान की अमूल्य धरोहर कहे जाते हैं । वेद अर्थात् चार वेद, अठ्ठारह पुराण एक सौ आठ उपनिषद, रामायण, वेदांतसूत्र, षडदर्शन इत्यादि के स्म में जाने जाते हैं।

मानवरचित पुस्तक को या अन्य कोई भी कृति हो उसमें झगड़ा, उग्रवाद, दुराग्रह, इर्ष्या या लडायक पशुवृत्ति आर्य संस्कृति की कर्कशता का भाव वेदों में है ही नहीं । किन्तु विश्वकल्याण की भावना की समरसता वेदों की ऋचाओं में परिपूर्ण है । देव, दानव, मानव, पशु, पक्षी, वृक्ष, लता, कीट, पतंग, जीवजन्तुओं के प्रति भी सौहार्द तथा आत्मीयता की भावना वेदों में मिलती है । वेद परम सत्य ईश्वर रचित हैं । इसीलिए विश्व के सभी लोगों ने इसे स्वीकार किया है । वैदिक ग्रन्थरत्न साहित्य में कही भी ठग विद्या, अज्ञानता, आलस्य, अतिशयोक्ति भ्रष्ट आहार, अनैतिक व्याख्यान का सम्पूर्ण अभाव है । सुख तथा आनंद का आशीर्वाद स्म वेद हैं ।

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत् ॥

सभी भारतीय लोग जागृत हों, वैदिक धर्म के प्रति भाव खिलें। वैदिक धर्म में अनोखी ऐसी शक्ति है जो दानव स्मी दुर्गुण से दूरकरके सच्चे अर्थ में देवता बनाती है। वेद अर्थात् - ईश्वर के उपदेश का ज्ञान विज्ञान। इसीलिए वेदो में ये वर्णित धर्म वैदिक धर्म कहा जाता है। ईश्वर रचित इस वैदिक दर्म में दूधका दूध पानी का पानी करके बताया गया है । परमेश्वर का विज्ञान तथा उपदेश स्मी सूर्य प्रकाश की तरह स्पष्ट है । वेद धवल दुग्ध की तरह अत्यन्त पवित्र है। अज्ञानता क्या है यह भी वेद बताते है । शास्त्रों के आदेशानुसार मनुष्यका जीवन मानवता के धर्मानुस्म नहीं है तो वह अधर्म है । इसलिये धर्म और अधर्म का निर्णय कोई देव, दावन या मानव नहीं कर सकता । परंतु वैदिक ग्रंथ भगवद्गीता अवश्य मार्गदर्शन करती है। क्योंकि वह ईश्वर की अमृतवाणी है । वह परमेश्वर श्रीकृष्ण के उपदेश का धर्म है । इसलिए मनुष्य को शास्त्रानुसार जीवन जीना चाहिए । मनुष्य के लिए धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारो पुरुषार्थ भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में समाजाता है । क्योंकि वेदों के गूढतत्व का संकेत मानवोंको कृष्ण भावना के पंचम पुस्मार्थ का रहस्य समझाना है। इसलिये बुद्धिशाली तथा चतुर मनुष्य को ब्रह्मभावना अर्थात्, कृष्ण सेवा का शुभ संकेत वेदों में से सीखना चाहिए । अतः परब्रह्म ईश्वर, कर्ता ओम, परमेश्वर, परमात्मा, इत्यादि नाम परमात्मा कृष्ण के निर्देशक हैं । अर्थात् कृष्ण के संबंधमें युक्त है । इसलिए वेदों में परम सत्य श्रीकृष्ण को जानने का उपदेश है । यह रहस्य वेदों के अध्ययन से प्राप्त होना सम्भव है।

सर्वोपरि श्रीहरिकृष्ण महाराजने जिसके एकएक शब्द एकएक वाक्य चिन्तन करके अपनी मुहर लगाई है। ऐसे वचनामृत, शिक्षापत्री, सत्संगिजीवन तथा सत्संगिभूषण जैसे ग्रंथ मूल सम्प्रदाय की परंपरा में हस्तालिखित आज भी प्राप्य हैं ।



श्री स्वामिनारायण भगवान अंतकाल में लेने अवश्य आते हैं

- दिनेशभाई के. भगत

उन्तीसवीं सदी की धर्मशोधक प्रवृत्तियों में स्वामिनारायण संप्रदाय प्रथम क्रम में आता है। ऊद्धवावतार स.गु. रामानंद स्वामी इ.स. १७५५ में ऊद्धव संप्रदाय की स्थापना किये। लोज गाँव में १० महीने प्रतीक्षा करने के बाद रामानंद स्वामी को नीलकंठ वर्णी पीपलाणा गाँव में मिले। १८०१ में नीलकंठवर्णीने भागवती दीक्षा लेकर नारायणमुनि, सहजानंद इत्यादि नामों से जाने गए। बाद में रामानंद स्वामीने सहजानंद स्वामी को अपना उत्तराधिकार देदिया। इसके बाद १८०२ में रामानंद स्वामी स्वधाम चले गये। बाद में २८ वर्ष तक धर्मप्रचार का कार्य गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ जैसे स्थानो में किया यद्यपि आज जैसे प्रवास की व्यवस्था नहीं थी तथापि माणकी घोडी या बैलगाडी में बैठ कर अथक पुरुषार्थ करके निर्जन बन को सुजन बनादिया। रात दिन उन्ही के प्रयास का यह फल है कि ज्ञान, वैराग्य भक्ति तथा आत्मनिष्ठा का यथार्थ ज्ञान सभी को मिल सका। जो धर्म से विमुख थे जिन्हे धर्म का ज्ञान नही था उन्हे सच्चा मार्ग बताया। आदर्श सत्संगी, आदर्श नागरिक बनाया। उनके साधुओं तथा हरिभक्तों पर विरोधियों का प्रहार खूब था फिर भी उसका सामना बिना किये सहन करके स्वधर्म में निष्ठापूर्ण लगे रहे। इसी से अंग्रेज शासक इनके कार्य की प्रशंसा किये है। कितने अंग्रेज लेखक स्वामिनारायण को हिन्दू समाज का सुधारक बताये हैं। इनके जीवन के तीस वर्ष में सामाजिक तथा धार्मिक नवचेतना की क्रांति फैल गयी थी। स्वामिनारायण भगवानने राजा-महाराजा, काठी-दरबारों से लेकर गरीब से गरीब के द्वार को पावन करके उनके संकल्पो को पूर्ण किया। उन्ही के समकाल में ही उनके भक्त भगवान के रूप में मानने लगे थे। उनके संत भी इतने प्रतापी थे कि उनका आशीर्वाद फल जाता था। अक्षरमूर्ति गोपालनंद स्वामी को उमरेठ में एक दिनज्वर आ गया। उसी दिन रघुवीरजी महाराज को कहे कि आज हम सब वडताल चले। उस दिन बडताल रुके। उसके बाद स्वामीने कहा कि सभी लोग भोजन करलो बाद में स्वामीजी को श्रीजी महाराज का अलौकिक दर्शन हुआ। उस समय स्वामीने हजारों मंत्र श्लोक बोलकर महाराज की स्तुति की। बहुत चमत्कार बताकर सम्वत १९०८ की वैशाख वद पंचमी को देहत्याग कर अक्षरधाम चले गये। वडताल में उनके समाधि स्थल का दर्शन करके लोग धन्यता का अनुभव करते हैं।

जिस समय दादा खाचर देह त्याग किये उस समय श्रीजी महाराज विमान लेकर स्वयं लेने आये। उन्हे ले गये और अपना प्रताप बताये। उस समय चंदन की वृष्टि हो रही थी। गाँव के हरिभक्तों को यह सुखद दर्शन हुआ था।

प.पू. कृष्णानंद स्वामीने भक्तिप्रियदासजी को ऐसा कहे थे कि जब हम देह त्यागेंगे तब आप मेरे पास रहेंगे। बाद में सोलह की साल में अहमदाबाद मंदिर में कृष्णानंद स्वामी विमार हुए और भक्तिप्रियदासजी घूमने गये वहाँ से आये तो स्वमीने कहा कि जो आपको कहा था वह सत्य हो गया। आज मैं शरीर छोडने वाला हूँ महाराज का दर्शन हो गया है। बोलते चालते ही महाराज अक्षरधाम को ले गये।

गाँव व्यार में तरवाडी अमूलख को महाराज अंत में लेने आये। उस समय उनकी बहन मानबाई ने बताया कि अमूलख वासनिक है। वह महाराज को छोड़कर दूसरे लोक में चला जायेगा। यह जानकर समाधि करके अक्षरधाम तक ले गये।

अक्षरधाम मे छोड़कर पीछे आये ।

ज्येष्ठ मास में स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी देह छोडने का संकल्प किये तब अहमदाबाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा बड़े बड़े संत कहने लगे कि कच्छ के रण में जो जो संत थे वे यहाँ आगये । अब देह छोड़ देंगे। बाद में श्रीहरि लाखो विमान लेकर मुक्तों के साथ पधारे । उनके तेज से भूमि तथा आकाश प्रकाशमान हो गया था । महाराज ब्रह्मानंद स्वामी को लेकर जब जा रहे थे तब लाखो लोंगों ने यह दृश्य अपनी आँखो से देखा । वि.स. १८८८ ज्येष्ठ सुक्ल १० के दिन ब्रह्मानंद स्वामीने मूली में देहोत्सर्ग किया ।

ग्राम प्रांतिज में एक हरिभक्ता बहन को महाराज रात्रि में रथ लेकर लेने आये । और साथ लेकर चले गये । रथ के साथ जाते समय बुहत लोगों ने दर्शन किया ।

ग्राम तलसाणा में चारण की दासी का ऐसा नियम था कि जो साधु आये उसे रसोई बनाने के लिए उपल (गोहरी) देती थी । उसे अन्त काल में महाराज दर्शन देकर ऐसा कहे कि आप मेरे साधुओं को गोहरी देती थी इसलिए आपको हम अपने धाम में ले जायेंगे । उन्हे स्वधाम में ले गये ।

इस प्रकार भगवान अंतकाल में अपने भक्तों को लेने स्वयं आकर भक्तों के संकल्प को पूरा करते हैं ।

श्रद्धा विश्वास होना चाहिए, शरणागति होनी चाहिए ।

पृष्ठ ६ से आगे

श्री नरनारायणदेव स्वयं श्रीहरि

नरनारायणदेव के मुख्यत्व को लाकर उस रहस्य को समझाते रहते हैं । श्रीकृष्ण परमात्मा अक्षरधाम के अधिपति इस सभा में विराजाम रहते है । उन्होंने स्वस्वस्म को लाखो स्मये खर्च करके शिखरी मंदिर बनाकर श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया है । प्रत्यक्ष श्री नरनारायणदेव का ही इस भरतखंड के जो अधिपति है सभी उन्हीं का भजन करते है । व्यभिचारिणी स्त्री की तरह अन्यत्र न जाकर एकमात्र नरनारायणदेव की उपासना से सार्वत्रिक सुख सुलभ है । इस प्रकार जो मेरा वचन मानेगे उसे सर्वसुख प्राप्त होगा । आप सभी को हमारा वचन मानना होगा तभी हम अक्षरधाम में लेजायेंगे । इस प्रकार का वचन श्री भगवान स्वामिनारायण के मुख का है ।

सम्वत् १८८२ के फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के दिन श्रीजी महाराज अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव मंदिर के दरवाजा के ऊपर वाले मकान पर वासुदेव माहात्म्य वंचवा रहे थे । बाद में सन्ध्या के समय नींम के वृक्ष के नीचे विराजमान थे उसी समय श्री पागजी देवने प्रश्न किया । हे महाराज ! आप में कैसे मन स्थिर हो सकता है । श्रीजी महाराजने कहा कि भगवान के माहात्म्य को जानने के लिए स्वस्म का जानना आवश्यक है । बाद में अपने विषय में स्पष्ट किया और कहा कि पग के अंगूठे को पृथ्वी में दबाऊं तो असंख्य ब्रह्मांड की पृथ्वी डिगने लगेगग । सूर्य, चंन्द्रमा सभी में मेरा ही तेज है । जीव मेरी शरणागति होते हैं । जीव जो मेरी शरणागति होंगे उन्हे हम स्वस्वस्म बनादेंगे । ब्रह्मांड की उत्पत्ति कर सकतें हैं ऐसा बना देंगे । लेकिन अहंकार आने नहीं देना । इस के साथ यह जानना कि श्री नरनारायणदेव की कृपा से हम इस स्म को प्राप्त किये हैं ।

अपने आत्यंतिक कल्याण के लिए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री इस पुस्तक में श्री नरनारायणदेव के वचनामृत ग.प्र. ८, ग.प्र. ४८, ७३, ७४, सा. १६, ग.प्र. २१, ग.म.प्र. २२, अम. ४, ६, ८, जेत. ३, ४, ५ प्रकरणों को समाविष्ट करके खूब परीश्रम का कार्य किया है । प्रतिदिन उसका पठन, मनन, निदिध्यासन करें तो महाराजश्री का यह पुस्मार्थ सार्थक हो जाये । महाराजश्री के इस पुस्मार्थ को जीवन में उतारकर मोक्ष भागी बनना चाहिए ।

कीर्तन भक्ति

- साधु धर्मकिशोरदास गुरु नारायणस्वरूपदास (इलाहाबाद)

"मनुष्य का अस्तित्व तीन तलो में विभाजित है। शरीर, बुद्धि, हृदय। या दूसरी तरह से कहें तो कर्म, विचार और भाव। इन तीनो तलो से स्वयं की यात्रा हो सकती है। स्थूलतम यात्रा होगी कर्म की। इसलिए धर्म के जगत में कर्मकांड स्थूलतम प्रक्रिया है। दूसरा द्वार होगा ज्ञान का, विचारका, चिंतन-मनन। दूसरा द्वार पहले से ज्यादा सूक्ष्म है। दूसरे द्वार का नाम ज्ञानयोग। तीसरा द्वार सूक्ष्मातिसूक्ष्म है। - भाव का प्रीतिका, प्रार्थना का, व उस तीसरे द्वार का नाम भक्तियोग है।

ज्ञान का मार्ग संकीर्ण है। भक्ति का मार्ग विराट है। ज्ञान के मार्ग पर तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है वहाँ तो तुम्हे अ, ब, स, से शुरुकरना पडेगा। ज्ञान का मार्ग आदमी की खोज है। व भक्ति का मार्ग तो प्रभु प्रसाद है। कर्म से लोग पहुचते है। लेकिन बडी लम्बी यात्रा है। ज्ञान से भी लोग पहुंचते है। परंतु यात्रासंक्षिप्त नहीं है। बहुत सीढियाँ पार करनी पडती है। पहले से कम लेकिन तीसरे की दृष्टि से बहुत ज्यादा। भक्ति छलांग है। सीढियां भी नहीं हैं। दूरी भी नही हैं। भक्ति एकक्षण मे घट सकती है। भक्ति तत्क्षण घट सकती है। भक्ति केवल भाव की बात है। इधर भाव उधर स्मांतरण। कर्म मे तो कुछ करना होगा। विचार में कुछ सोचना होगा। व भक्ति में न करना है न सोचना है। इसलिए भक्ति को सर्वश्रेष्ठ कहा है। व अपने धर्मशास्त्रो मे ज्ञान, वैराग्य, धर्म, यम, नियम, भक्ति आदि में सर्वश्रेष्ठ भक्ति को बताने में आया है। जिस तरह वृक्ष है तो कर्म, फिर फूल लगे तो ज्ञान, फिर सुवास उडी तो भक्ति। अर्थात सुवास अंत में है।

भागवत महापुराण - में नौ प्रकार की भक्ति बतायी गयी है।

श्रवणं कीर्तनं विष्णो: स्मरणं
पादसेवनम्
अर्चनं वंदनं दास्यं
साख्यात्मनिवेदनम्

इस प्रकार से यह नौ (९) प्रकार की भक्ति बताने में आयी है।

जिस तरह से सभी देवों में इन्द्र देव उत्तम है। सर्व पक्षियों में गरुड पक्षी उत्तम है। सर्व वर्णो में ब्राह्मण वर्ण उत्तम है। सब नदियों में गगां उत्तम है। सर्व पेय मेंअमृत पेय उत्तम है। उसी प्रकार से सर्व भक्ति में कीर्तन भक्ति उत्तम है। व आप सब भक्तो के मन मे प्रश्न उत्पन्न होगा कि कीर्तन भक्ति यानि क्या ?

तो कीर्तन भक्ति यानि प्रभु के (गुण, प्रताप, ऐश्वर्य) व महिमा के सूचक पदो का गान करना उसे कीर्तन भक्ति कहते है। शुकदेवजी महाराजने कीर्तन भक्ति की तो सिद्ध विदैही व आत्माराम कहलाए। व शुकदेवजी महाराजने 'भागवत' शास्त्र में कीर्तन भक्ति की महिमा लिखते हुए कहते है।

यत्फलं नास्ति तपसा न योगेन
समाधिना।
तत्फलं लभते सम्यङ्कलौ
केशवकीर्तनात् ॥

जो फल तप से नहीं मिलता, ज्ञान से नहीं मिलता, योग से नहीं मिलता, समाधि से नहीं मिलता वह फल कलियुग में भगवान श्रीकृष्ण के कीर्तन भक्ति द्वारा मिलता है। व अपने इष्टदेव पूर्ण पुरुषोत्तम परमात्मा भगवान स्वामिनारायण ने भी कहा है।

भगवन्मन्दिर सर्वैः सायं
गन्तव्यमन्वहम्।
नामसङ्कीर्तनं कार्यं
तत्रोच्चैराधिकापतेः ॥६३॥

हमारे आश्रित समस्त भक्तगण रोज साँयकाल के समय मन्दिर जाये व मन्दिर के समय राधिका पति ऐसे श्रीकृष्ण भगवान का ऊँचे स्वर से कीर्तन गान करे इस देश के अन्दर बहुत से बड़े-बड़े गायक कलाकार है। परन्तु आपने ऐसा कभी नहीं सुना होगा। कि भगवान कीसी गायक कलाकार के ऊपर प्रसन्न हुए है। ऐसा क्यों ? क्योंकि गाने मे उनका भाव नहीं होता। वह तो केवल नाम, शोहरत, स्मया कमाने के लिये गाते है। लेकिन भगवान के भक्त जब गाते हो फिर भले ही उनका कंठ बेसुरा हो फिर भी भगवान उनके उपर प्रसन्न हो जाते है। व रक्षा सहाय करते है।

ऐसे तो अनेक किस्से अपने भारतीय धर्मशास्त्रो में देखने को मिलेगें। जैसे कि मीराबाई, सूरदास, नरसिंह मेहता जिन्होने अपनें भाव-भरे कीर्तन भक्ति द्वारा प्रभु को प्रसन्न

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १६

मैं और मेरा

- संकलन - डॉ. परेश गज्जर (पेतापुर)

मारुं मारुं करीने धन मेळव्युं रे।
तेमा तारुं नथी तल भार, अन्त काल
सगु नहिं कोई रे॥

एक शेठ था उसके पास माल मिल्कत, बंगला, गाडी, खेती एवं एक बड़ी मिल भी थी। खूब धनवान था इसलिए धन का अहंकार था। वह शेठ स्वामिनारायण संप्रदाय का आश्रित था। कभी कभी मंदिर में दर्शन करने भी जाता था। बड़े-बड़े संतो के पास सत्संगी भी करता था। संतो को अपने वैभव की बात करता था। एक दिन उसके मन में हुआ कि घर सन्तों को बुलाकर आवभगत की जाय। इसलिए संत को आमंत्रण दिया।

जैसे भगवान को भक्त प्रिय होता है। वैसे ही संतो में भी हरिभक्तों के कल्याण की भावना रहती है। हरिभक्त नाराज न हों यह सदा ध्यान रहता है। शिक्षापत्री के आदेशानुसार संत शेठ के घर पधारे। शेठजी नया मकान बनाये थे खूब खर्चा किये थे नये अद्यतन सामग्री से युक्त प्रासाद था। शेठ को अपने वैभवी मकान में पदार्पण कराने की विशेष लालसा थी। जिस में प्रथम प्रधान फाटक को बताये और कहे कि इसमें एक लाख खर्च हुआ है। इसके बाद अपने दो बडे रूम को बताये, डाईनींग रूम में टेबल इत्यादिकी उत्तम व्यवस्था को बताये। पोर्च में खडी चार गाडी भी दिखाये। बाद में यह भी कहे कि इस तरह तो चार बंगला है। यह सभी जानकारी शेठजी देते ही जा रहे थे लेकिन संतो के चेहरे में कोई फर्क नहीं था। अंत में शेठने संतो से पूछा कि स्वामीजी आप सभी को यह सब कैसा लगा ? लेकिन संतो ने कोई उत्तर नहीं दिया।

सबकुछ देखने के बाद संत सोफापर आकर बिराजमान हो गये। उस रूम में दुनियाका नकशा था, उस नकशें में भारत कहाँ है ऐसा संतने शेठ से पूछा। शेठ अंगुली रखकर बताये यहाँ है। फिर पूछे कि आप जहाँ रहते है वह अहमदाबाद कहाँ है। तब शेठ अहमदाबाद भी बताये। आपका बंगला, बांग, बागीचा, मील ए सब कहाँ है ऐसा संतोने पूछा तो शेठने बताया कि उत्तर दिशा में बंगला दक्षिण दिशा में मील ऐसा बताये। पश्चात् संतोने एकप्रश्न पूछा किइसमें आप कहाँ है। शेठ तो विचार में पड़ गये और कहे कि स्वामीजी इसमें हम तो नहीं है ? संतोने कहा जब आप इनसब में नही हैं तो आप कैसे ? सही तो आपका कुछ भी नहीं है। अज्ञान में ही सब कुछ मेरा है ऐसा मान लिये है। इसीलिए जब सबकुछ छूट जाता है या छोडना पडता है, तब दुःख होता है। आप शेठ नहीं धनवान नहीं, गरीब नहीं, आप जो है वह भूल गये हैं। इसलिये आप अपने को सबकुछ मान बैठे है। जिसकी वजह से आप बने है वह स्थिर नहीं है और जो स्थिर है उसकी आपको जनाकारी नहीं है। जो छूटजाने वाला है, जो खोजाने वाला है, जो सडजाने वाला है, जो जलजाने वाला है, वह आप नहीं हो, आपका भी नहीं है। इसी प्रकार यह शरीर हमारी है ऐसा मानने से कर्म, बुद्धि से इन्द्रियो से, जो कर्म करतेहै, वे सभी बंधन कारक हैं। जिसे आप अपना मानते है वह सब तुच्छ है। उसके साथ आप का कितना सम्बंध है यह विचार लेना चाहिए। बाद में जब ज्ञान हो जायेगा तब मेरा-तेरा का सम्बन्ध खत्म हो जायेगा। धन वगैरह का सम्बन्ध जब तक शरीर में जीव है तभी तक रहता है। सगा संबन्धी या पारिवारिक सम्बन्ध भी स्मशानतक रहता है। मृत्यु जब आती है। तब पत्नी घर की देहली तक, बेटा-बेटी स्मशान तक जलाने आयेंगे। साथ में कुछ आनेवाला नहीं है। केवल सत् या असत् कर्म साथ जाने वाला है। इसलिये ज्ञानपूर्वक सत्कर्म ही करना चाहिए।

माटे सवे तु साचा संत रे,
तारा टलशे त्रिविधना ताप
अंतकाले।
अति मोटा पुरुषने आशरे रे,
बड़े पूर्व जन्मना पाप अन्तकाले॥

दयानंद स्वामी की अमृतवाणी के अनुसार अच्छे संत की शरण में जाना चाहिए। वे आप की शरणागति स्वीकार करके परम तत्व का मार्ग बतायेगें। वे सच्चे मार्ग दर्शक है - मोक्ष ही परमतत्व है। संसार सागर तो मृगमरीचिका है। यह लुभावना जरूर है

लेकिन यथार्थ नहीं है। सभी के साथ अपना पन का परित्याग करके केवल इतना ही ममत्व हो कि जैसे जल और कमल पत्ते का होता है जिसे आप अपना मानते है, वह कल किसी दूसरे का हो जायेगा। जब आप नहीं थे तब भी यह सबकुछ था, जब आप चले जायेगे तब भी यह सबकुछ रहने वाला है। जैसे हम बस या गाडी में मुसाफिरी करते हैं तब हम कहतें है कि यह बस मेरी है, यह सीट मेरी है। लेकिन यह हम जानते है कि यह बस या सीट मेरी नहीं है, हम तो एकमात्र मुसाफिर हैं। केवल मुसाफिरी तक मेरी हैं।

पूर्व नुं पुण्य प्रगट थयुं ज्यारे।
स्वामिनारायण मणिया रे त्यारे।

आप के पूर्व के पुण्य के फल से ही यह मानव शरीर मिली है। उसके जतन के सिवाय "मैं ही आत्मा हूँ। अजर अमर हूँ, अखंड अविनाशी हूँ। स्वामिनारायण भगवान तथा उनके संत मिले हैं। इसी में अपने मन को लगाना चाहिए। संसार में कुछ तत्व नहीं है। एक मात्र भगवान स्वमिनारायण एवं उनके संत ही शरण के योग्य है। इन्ही का सहारा लेना चाहिए। शिक्षापत्री में बताये अनुसार पंच वर्तमान का पालन करना, गृहस्थ धर्म का पालन करना, भगवान की अमृतमयी वाणी वचनामृतका रसास्वाद करना, जड भरत जैसा व्यवार करना, केवल भगवतभक्त बनकर जीवन जीना, जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

शेठ को संतो की वाणी का हार्द्द समझ में आगया। परिणाम स्वस्म सन्तो के चरण में गिर पड़ा और भगवान की दृढ भक्ति में परायण हो गया।

पृष्ठ १४ से आगे

कीर्तन भक्ति

किया। व अपने सम्प्रदाय के महान, विद्वान, तपस्वी संत ब्रह्मानंद स्वामी, जब दुर्गपुर (गढपुर) मे गोपीनाथजी महाराज की मूर्ति के आगे ध्यान मग्न होकर कीर्तन गाते है।

शामलियाने जोवा सारुतनडामां
थाय छे तान रे।

उसी वक्त गोपीनाथजी महाराज मूर्ति में से साक्षात् प्रगट होकर जिस तरह माता अपने पुत्र को प्रेम से गले लगाती है। उसी तरह महाराजभी ब्रह्मानंद स्वामी को गले लगाते है। देखा कीर्तन भक्ति की शक्ति। एक नरसिंह मेहता का प्रसंग याद आता है। एक समय जूनागढ गाँव में बहुत संत महात्मा आये। उनको तीर्थ यात्रा मे जाना था। व रास्ते में अथवा जंगल में चोर, लुटेरों का डर था क्योंकि उनके पास थोडा धन् था। वे एक ऐसे व्याक्ति को ढूंढ रहे थे जो ये स्मये सुरक्षित जहाँ कहे वहाँ पहुँचा दे। उस गाँव में नरसिंह मेहता के बहुत लोग द्वेषी थे। संत महात्मा गाँव के चौराहे पर जाकर कुछ व्यक्तियों से पूछते है। कि हे भाई गाँव में कोई ऐसा व्यक्ति है। जो हमारे स्मये सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दे। तभी उन्ही में से एक द्वेषी कहता है हाँ नरसिंह महेता आपका काम कर सकता है। संत-महात्मा नरसिंह मेहता को ढूंढते - २ उसकी कुटिया तक पहुँचते है। नरसिंह मेहता संतो का आदर सत्कार करते हैं। भोजन कराते है। संत-महात्मा भोजन करने के बाद नरसिंह महेता से पूछते हैं। संतो अब मेरे लायक कोई सेवा हो तो कहो। तब संत कहते है। हम तीर्थ यात्रा जा रहे है। ये स्मये वहाँ पहुचाने है। तो आप हमे हूंडी लिखकर दीजिये। अभीइस नये युग में लोग (चेक) लिखकर देते है। पहले के समय में हुँडी दी जाती थी। नरसिंह महेता संतो के प्रेमी थे। मना नहीं कर सके। वेह हुँडी में शामळिया शेठ एक सुन्दर नाम लिखकर दिया। संत जब तीर्थश्रेत्र में पहुँचते है। व पता लगाते है कि शामळिया शेठ कोन है। परंतु शामळिया शेठ नाम का कोई व्यक्ति ही नही था जो मिलता। संत लोग परेशान हुए कहीं नरसिंह मेहता ने हम को ठग तो नहीं लिया इस प्रकार अनेक प्रश्न मन मे उत्पन्न हुए। इधर नरसिंह मेहता मन ही मन विचार करने लगे कि अब क्या किया जाय। इस तरह विचार कर खुद की कुटिया मे जाकर भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति के आगे बैठकर ध्यानमग्न होकर भाव से एक कीर्तन गाया।

हे मारी हुँडी स्वीकारो महाराज रे
शामळा गिरधारी,
मारी हुँडी शामळिया नी हाथ रे
शामळा गिरधारी

और यह कीर्तन सुनते ही प्रभु श्रीकृष्ण एक भक्त की लाज रखने के लिए एक वणिक का स्म लेकर तीर्थक्षेत्र मे जाकर संतो को हुंडी का स्मया देते है। नरसिंह मेहता का कार्य सफल करते है आज जगत का नाथ भक्त के लिए गाते है।

मेहताजी फरी लखजो वणिक् केरा
काज रे शामळा गिरधारी

तो देखा भक्तो कीर्तन भक्ति की महिमा। इसलिए कलियुग में कीर्तन भक्ति को श्रेष्ठ कहा है।

कपटी ने कपट किया

-अमृत क. मोदी (सोजा)

संवत १८८६ में अक्षरवास के समय श्रीजी महाराज स्वयं जानते थे कि ब्रह्मानंद स्वामी गढड़ा में रहेंगे तो मुझे धाम में जाने नहीं देंगे । एन केन रखने का प्रयत्न करेंगे । इसलिए श्रीजी महाराज की प्रेरणा से स.गु. गुणातीतानंद स्वामी को पत्र लिखे कि यहाँ पर स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी को तुरंत भेजिए । उनके विना यहाँ का मंदिर बन नहीं सकता । यह पत्र वांचकर गुणातीतानंद स्वामी ने जूनागढ बोलाने हेतु ब्रह्मानंद स्वामी के लिए श्रीजी महाराज के पास पत्र लिखा । श्रीजी महाराजने जूनागढ जाने की आज्ञा करदी । यद्यपि श्रीजी महाराज का स्वास्थ्य ठीक नहीं था तो भी आज्ञा प्राप्त करके ब्रह्मानंद स्वामी जूनागढ के लिए प्रस्थान कर दिये ।

हैडानो हार हरि रे, मारो रंगभीनो
हैडानो हार हरि
मंदिर मां पधरावी मोहन ने भेटुं हूँ
अंक भरी रे ।
जगना जीवन ने हूँ जावा नहीं
दऊ, राखीश जतन करी रे ।

स्वामी को विचार करते हुए एकदवा याद आ गयी वह दवा लेने के लिए दामोदर कुंड गीरनार पर्वत की तलहटी में गये । वहाँ से संजीवनी वनस्पति लाये, पानी से धोकर, स्वच्छकर दूध में मिलाकर, कटोरा में भरकर मुक्तानंद स्वामी को देकर कहे कि चाहे जैसा भी रोग हो इसके पीने से ठीक हो जाता है । इसलिए यह औषधि महाराज को पिलाई जाय तो महाराज जल्दी अच्छे हो जायेगें । तीनों संत महाराज को प्रार्थना किये कि आप यह औषधि पीलें तो जल्दी ठीक हो जायेंगे । स.गु. ब्रह्मानंद स्वामीने गिरनार से यह औषधि लाया है आप इसको पीलें । बाद में महाराज ने उस औषधि को मुख से लगाकर नीचे रखदिया । परंतु ब्रह्म मुनि को याद आ गया कि अब महाराज इस अवनी पर अधिक समय तक नहीं रहेंगे । ऐसी याद करके हृदय गद्‌गद् हो गया । लेकिन महाराज की आज्ञा हुई है जूनागढ जाने की तो जाना अवश्य है । इसके बाद श्रीजी महाराज को साष्टांग प्रणाम करके प्रस्थान किये गाँव से बाहर जाते ही अमंगल सूचक असगुन होने लगे ऐसा विचार कर दोहा बोलने लगे -

हरता एज सुकना हरख, हरख
बुद्धिबल हरण ।
हरवा तेज हिंमत हरण, हरवा प्राण
तन हरण ॥

ऐसा दोहा बोलकर पुनः अक्षरदालान में वापस जाकर महाराज को दंडवत प्रणाम करने लगे । श्रीजी महाराज के शरीरमें खूब पीड़ा हो रही थी । फिर भी ब्रह्म मुनि को बांह में भरकर हृदय से लगाकर उन्हे धैर्य देते हुए कहे कि आपके हृदय में यह अपना चरणारविन्द देता हूँ, अपने गले का हार देता हूँ । आप थोड़ा भी चिन्ता मत करना हम सदा आपके साथ रहेंगे । अब आप जल्दी जूनागढ जाइये तथा मंदिर का काम प्रारंभ करवाइये । कितने विघ्न संतोषी मनुष्य मंदिर के कार्य में विघ्न उपस्थित किये थे । परन्तु स्वामी के जाने के बाद रातोरात वह दीवाल बनादी गयी । द्वेषी लोग यह बात जानकर तथा ब्रह्मानंद स्वामी को आया हुआ जानकर विरोध करना छोड़दिये क्योंकि उन्हे डर था कि ब्रह्मानंद स्वामी नवाब के यहाँ शिकायत करेंगे तो नवाब राज्य बाहर कर देगा । ऐसा विचार कर सभी शांत हो गये ।

स्वामी के जूनागढ जाने के पश्चात् सं. १८८६ को जेष्ठ शुक्ल दशमी के दिन महाराज इस नश्वर देहका त्याग कर दिये । उनके शरीर की अग्नि संस्कार विधि करके स्वामीजी को लेने ऊँट पर सवारी करके भगुजी गये उस समय स्वामीजी मंदिर के

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १९

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सर्वोत्तम दवा शिक्षापत्री

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

प्यारे मित्रो !

स्वामिनारायण भगवान सदा प्रगट एवं प्रत्यक्ष रहते हैं । लेकिन कभी अपने साथ वात करते हैं क्या ? यदि आप को वात करना है तो सुनिये, शिक्षापत्री यह श्रीजी महाराज का बोलता हुआ स्वस्म है । प्रतिदिन प्रातः काल शिक्षापत्री का वंदन करके महाराज का वंदन कर लेना चाहिए । श्रीजी महाराज आपके साथ बोलते है । लेकिन आपको उनके साथ बोलना होगा । भगवान स्वामिनारायण शिक्षापत्री के स्वस्म में हम सभी के साथ बोलते है । लेकिन एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमें श्रीजी महाराज के साथ बात कब करनी चाहिए । साम को नहीं ? यदि कैमरावाले का हाथ कांपता हो तो फोटो अच्छा कैसे आयेगा । इसीप्रकार अपने में मनकी स्थिरता नहोतो महाराज की वाणी अपने अंदर कैसे उतर सकती है । स्वामिनारायण भगवान के साथ वात करने का उत्तम समय क्या है ? यह बात ऊपर से समझना चाहिए ।

रामायण में एक कथा आती है - लंका में लडाई के समय गाँव के किनारे शक्ति के प्रहार से लक्ष्मणजी बेभान हो गये थे बोल चाल नहीं रहे थे । राम जैसे वहाँ रोने लगे थे । और कहने लगे मेरे लक्ष्मणा का क्या होगा ? लेकिन एक जन आकर उपाय बताये कि - लक्ष्मण का यदि प्राण बचाना हो तो सूर्य उदित होने से पहले एक विशल्यकरणी औषधिलानी पडेगी । यह औषधि दूर सुदूर के पहाडों में हैं । यह यदि आजाय तो लक्ष्मण पूर्ववत् हो जायेगे । अन्यथा नहीं । उस समय भगवान श्री राम का काम श्रीलक्ष्मणजी का काम कौन किया ? यह काम हनुमानजीने किया । हनुमानजी दौड़े वहाँ बहुत प्रपंच था । विशल्यकरणी औषधि ऐशी है जिसके पत्ते में से प्रकास निकल रहा था । लेकिन रावण की माया से सभी वृक्षो से प्रकाश निकल रहा था । हनुमानजीने विचार कि कि सम्पूर्ण पहाड ही उठा ले जाउँ । वृक्ष की पहचान में विलम्ब होगा समय कम है । पहचानने वाला वहाँ पहचान लेगा । सारे पहाड को उठा लिये । यह भगवान का काम था । भगवान के लिये क्या नहीं हो सकता है । भगवान की प्रसन्नता के लिए क्या नहीं करना चाहिए ? उस समय हम ऐसा उत्तर देंगे कि यह मेरा काम तो है नहीं, हम उसे पहचान सकते नहीं, इस लिये उसमें पड़ना ही नही है । आज कहें तो इक्यावन स्मये दे दूं । लेकिन इतना दूर कहाँ जायेंगे । हम तो भले नहीं जाये ? लेकिन तो बीर हनुमानजी हैं । सम्पूर्ण पहाड उठा लिये और लंका के किनारे लेजाकर रख दिये । अभी सूर्योदर हुआ नहीं था । सूर्य का प्रकाश इस औषधिपर पडे तो औषधिका असर कम हो जाय । सूर्योदय से पूर्व विशल्यकरणी ओषधि को पीसकर रस निकाल कर श्रीरामने स्वयं श्री लक्ष्मणजी को पिलाया तो तुरंत ही असर हुई और वे खड़े हो गये । लक्ष्मणजी स्वस्थ हो गये । कितना प्रभाव औषधिका ? कितना चमत्कार । लेकिन वैद्य की एक ही शर्त थी कि औषधि सूर्योदय पूर्व आनी चाहिए ।

प्यारे मित्रो ! आप सभी क्या विशल्य करणी औषधि देखे हैं ? आप किसीने नहीं देखा है लेकिन यह आपके पास ही है । लेकिन आप सब उसे देख नहीं रहे हैं । आप उसे पहचान नहीं रहे है । चिन्तामणि तो चिंतामणि बालक के पास होती है । बालक तो खेलने के लिए जैसे

गोली मांगता है ऐसा ही समझना चाहिए । उसे उसकी महिमा का क्या ख्याल । अरे ! वह आपके घर आपकी पूजा में आपके साथ शिक्षापत्री ही विशल्यकरणी महौषधि है । चाहे जितना बड़ा माया का प्रहार हुआ हौ रावण जैसे की कुसंगति का प्रहार हुआ हो उसे कोई बचा सकता नहीं । लेकिन शिक्षापत्री उसे वचासकती है । परंतु प्रातःकाल उठकर दैनिक पूजा विधि में ही एक बार कुछपाठ कर लेना चाहिए । प्रातः नहाधोकर शिक्षापत्री स्मी पांदडा का एक बार पान करलेना चाहिए । वही पान सम्पूर्ण दिन के कुसंगत को धोकर बाहर कर देगा । भक्ति में भजन में शौर्य आजाता है । हमारे ढीले रहने का कारण यह कि हम प्रातःउठकर इस औषधिका पान नहीं करते । बल्कि उठने के साथ पेपर बांचने लगते हैं । यद्यपि पेपर बांचने के लिये तो सम्पूर्ण दिन पड़ा रहता है । जगत की वात करने का पूरा दिन पड़ा है । प्रातः उठकर यह अवश्य करें कि शिक्षापत्री का ब्राह्ममुहूर्त में पाठ करें । कारण कि सूर्योदय पूर्व पूजा होती है उसी समय पाठ करना चाहिए । सम्पूर्ण शिक्षापत्री न बाचे तो कम से कम १० श्लोक का पाठ अवश्य करना चाहिए । बांचते समय यह विचार करना चाहिए कि हमारे इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान हमारे साथ वात कर रहे हैं । इसमें से आपके प्रश्नोका उत्तर या समस्या का समाधान मिल जायेगा । अपने संत भी ऐसा कहते कि शिक्षापत्री से पूछ कर जो व्यवहार करे वह कभी दुःखी नहीं होगा ।

मित्रो ! ख्याल आ गया न कि भगवान से बात करने का समय उत्तम कौन सा है । और अपनी पुरानी कहावत भी है कि -

रात्रे पहेला जे सूए वहेला उठे वीर।
बाल बुद्धि ने धन बधे सुख मां
रहे शरीर ॥

पृष्ठ १७ से आगे

कपटी ने कपट किया

शिखर पर चढ़कर कारीगर के कार्य का निरीक्षण कर रहे थे । उस समय भगुजी को आते देखकर स्वामीजीने विचार किया कि कुछ अनिष्ट हुआ है। भगुजी पास आकर ऊँट को झुकाकर स्वामी के चरण में गिरकर दंडवत प्रणाम किये । महाराज के अंतर्ध्यान की बात कही । समाचार जानकर स्वामी ने कहा ठीक है दुःखित होकर भगुजी के साथ गढपुर जाने को तैयार हो गये । ऊँट पर से उतरते ही स्वामीजी रोने लगे और कहने लगे कि आप ने महाराज के शरीर का उत्तम संस्कार किया है । बाद में स्वामीजीने कहा कि महाराजको अक्षरधाम से यहाँ लाऊँगा ।

पातलीया संगाथे बंधाणी मारे
प्रीतडी रे ।
ए विना घडी रह्युं नव जाय रे ।
बेनी थवा दीठे वधे छे उखेदना रे।
दीठा थी तनडुं टाढु थाय रे
..... पाथरीया ।

बाद में स.गु. गोपालानंद स्वामी ने कहा स्वामीजी चलिये गोपीनाथजी की मूर्ति का दर्शन करे । स्वामी मूर्ति के सामने खड़े होकर बोलने लगे -

"प्राण स्नेही धरु आवो, पिपरा
हियरा वीर धरत नहि मरा" ।

यही कीर्तन सजल नेत्र के साथ गाये कि लोगों के देखतें ही गोपीनाथ की मूर्ति में से श्रीजी महाराज बाहर आकर अपने कंठ की माला को स्वामीजी के गले में डाल दिये । तथा गले लगाकर मिले । स्वामी का मुख आनंदित हो गया । उसी समय श्रीजी महाराज गोपीनाथजी की मूर्ति में अदृश्य हो गये । स्वामी ने कहा -

तारु छोगु आवी मारा चित्तमां रह्युं ।
जगना जीवन स्हुं छोगुं जोईने,
अंतरमां अजवाडुं थयुं ।
सुन्दर श्याम सोहागीतारु,
मुख निरखीने दुःख दूर गयुं ।
आनंद सहित थयुं सुख अपार,
एक जीभे नव जाय कह्युं ।
ब्रह्मानंद कहे ए छोगा सारु,
लोकडियानुं अमे मेणुं सह्युं ।

सत्संग समाचार

श्री नरनारायणदेव के सांनिध्यमें सुनामी पिडितो की आत्माकी शांति के लिये आयोजित धुनि

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्यमें तथा प.पू. बडे महाराजश्री की उपस्थिति में अपने भारतदेश, थाईलैंड, श्रीलंका, अन्दमान निकोबार द्विप इत्यादि विस्तारो में कुदरती प्रकोप सुनामी के विनाशकारी भूकंप में लाखो मनुष्य तथा अन्य जीव प्राणी मृत्युको प्राप्त हुए । जिनकी आत्माकी शांति के लिए श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुनि ता. १-१-२००५ के दिन प्रात ५-३० से ६-३० तक आयोजन किया गया था । *- कोठारी धर्मप्रकाश स्वमी*

कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से पवित्र धनुर्मास तीर्थधाम बाल स्वस्म कष्ट भंजन देव के सांनिध्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में ता. १५-१२-२००४ से ता. १४-१-०५ तक धनुर्मास मे धुनि महोत्सव धूमधाम से मनाया गया । प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी इस धुनिप्रसंग पर पधारकर संत हरिभक्तों को अलौकिक सुखप्रदान किये थे । महंत स्वा. गुस्प्रसाददासजी को. आनंद स्वामी की प्रेरणा से हरिभक्तों ने मासिक तथा दैनिक धुनि बड़ी संख्या में संकलित करके श्रीराधाकृष्णदेव तथा कष्टभंजनदेव की कृपा प्राप्त किये थे । *- परेशभाई पटेल*

धोलका मंदिर में धनुर्मास संपन्न

सर्वोपरि मुरलीमनोहर की शुभ निश्रा में प.पू. बड़े महाराजश्री तथा छोटे महाराजश्री एवं लालजी महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी स.गु. जगतप्रकाशदासजी महंत विष्णुप्रसाददासजी की प्रेरणा से यहाँ १५ डिसम्बर से १५ नजवरी तक धनुर्मास में प्रात काल श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि समग्र वातावरण को आनंदविभोर कर देती थी । धोलका तथा अगलबगल ग्रामजन धुनि में अति प्रातःकाल आकर लाभ लेते थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा अग्रगण्य हरिभक्त धुनि का यजमान बनकर विविधि सेवा करके श्रीहरिकी कृपा के अधिकारी बने हैं । *- श्री न.ना.देव युवक मं. धोलका*

नारायणघाट मंदिर शाकोत्सव प.पू. महाराजश्री के हाथों सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी घनश्यामदास एवं देवप्रसाददासजी की प्रेरणा से तथा हरिभक्तों के सहयोग से ता. ९-१-०५ रविवार के दिन दिव्य शाकोत्सव प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों से सम्पन्न हुआ । शुद्ध घी में बैगन का शाक बघारकर अलौकिक शाकोत्सव की झांकी का दर्शन सभी हरिभक्तों ने किया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया ।

-प्रति गोरधनभाई वी. सीतापरा

सिद्धपुर मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिद्धपुर में धनुर्मास मे धुनि का लाभ लेने हेतु हरिभक्तगन बड़ी संख्या में आते थे । ठाकुरजीको अच्छी तरह से अलंकृत किया गया था । महंत स्वामी भक्तिप्रियदासजी तथा पूजारी स्वामी चन्द्रप्रकादासजी ने ठाकुरजी की सुंदर सेवा करके सभी की प्रसन्नता प्राप्त की थी । *- शा. श्रीरंगदासजी*

महेसाणा मंदिर में शाकोत्सव

निर्माणधीन श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा में ता. ४-२-०५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद हाथों से अद्भुत भव्य शाकोत्सव सम्पन्न किया गया । इस प्रसंग पर प्रातः ८-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा तथा संमान समारंभ का भी सुंदर आयोजन किया गया था । वक्तापद पद पर प.पू. पी.पी. स्वामी ने धर्मकुलकी महत्ता का सार समझाया था। महंत उत्तमप्रिय स्वामी तथा नारायणप्रसाद स्वामी ने इस प्रसंग पर सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया था । कितने भाविक हरिभक्त यजमान बनकर लाभ लिये । *- जे.के. पटेल ग्रुप स्कीम कमेटी सभ्य*

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पू. लक्ष्मणजीवन स्वामी की प्रेरणा से तथा एप्रोच सत्संग समाज के सहयोग से बाल स्वस्म श्री घनश्याम महाराजकी मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. १५-१-०५ के दिन विजय स्तंभ स्थापन तथा शाकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया था । जो नानाविध श्रृंगारों से अलंकृत वाहनो में बापुनगर विस्तार में घूमकर महोत्सव

स्थल पर पहुंची थी । प.पू. आचार्य महाराजश्री के वहद हाथों से विजय स्तंभ का पूजन तथा स्थापन किया गया था । इसके बाद सुंदर अद्‌भुत शाकोत्सव अपने वरद हाथो से सम्पन्न करके सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । विजय स्तंभ स्थापना के मुख्य यजमान पद पर प.भ. श्री परेशभाई देवशीभाई डाबेरी ने दिव्य लाभ लिया था ।

नोंध : एप्रोच मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव स्थल परिवर्तित करके नीचे स्थल पर नियत किया जा रहा है ।

श्री स्वामिनारायण नगर, जकातनाका के सामने, जीवन ट्वीन बंगलोज पासे, निकोल गाँव रोड

- गोरधनभाई सीतापरा

वडनगर श्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण मंदिर में महंत स्वामी श्रीहरि सेवादासजी की प्रेरणा से धनुर्मास के समय श्रीठाकुरजी का नानाविध श्रृंगार करके सुंदर दर्शन का लाभ वहाँ के हरिभक्तों ने लिया । शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी ने सुंदर कथा का सभी को लाभ दिया । धर्मपुत्र श्रीहरि तथा धर्मवंशी प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञानुसार सत्संगोन्नति के लिए सभी भावुक भक्तों की प्रेरणा से पीयूष पानकराकर धन्य बनादिया था ।

- शा. विश्वप्रकाशदासजी

विसनगर

श्री सहजानंद किशोर मंडल तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभी सदस्य गणं के पतंगोत्सव का कार्यक्रम ता. ९-१-०५ के दिन सहजानंद संस्कार धाम विसनगर में किया गया था । जिस में १०० जितने सदस्यगण भाग लिये थे । जिस में प्राप्त करने वाले को इनाम देकर उत्साहित किया गया था ।

- सहजानंद किशोर मंडल

धमासणा में शाकोत्सव संपन्न

श्रीजी महाराज द्वारा किये गये लोया में शाकोत्सव के समान धमासणा गाँव में श्री नरनारायणधेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री अपने वरद हाथों से शाकोत्सव करके उत्तर गुजरात के दंढाव्य देश के हरिभक्तों को महान सुख प्रदान किया था । स्वा. विष्णुप्रसाददासजीकी प्रेरणा से प.भ. विक्रमभाई भगाभाई पटेल यजमान बनकर प.पू. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्तकर धनभागी बने थे । वहाँ से प.पू. महाराजश्री प.भ. लालभाई शंकरभाई के घर पधारे थे ।

रामपुरा (भंकोडा)

पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान अपने परम पवित्र पदारविन्द से पवित्र करके जहाँ श्रीहरि माखन रोटी तथा चटनी खाये एवं जहाँ वैठकर स्नान किये वह प्रसादी का पत्थर आज भी दर्शनार्थियों को श्रीजी महाराज का स्मरण कराता है । यहाँ मंदिर में प्रातः ४-३० से ७-०० बजे तक धुनि, कीर्तन, कथा, प्रवचन इत्यादि का हरिभक्त लोग लाभ लेते हैं ।

- अरजणभाई गो. मोरी

खिदोल तथा मोणसा में सत्संग प्रवृत्ति

मूली के स्वामी देवप्रसाददासजी के मार्गदर्शन में धनुर्मास दरम्यान धुनि, भजन, कीर्तन किया गया । मोडासा में शा. छपैयाप्रसाददासजी धनुर्मास में श्रीहरि लीलामृत ग्रंथ की कथा करके धुनि का लाभ दिये थे । हरिभक्तभी बहुतायत में उपस्थित होकर लाभ लिये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से उत्तम सत्संग चल रहा है। *- रमेशभाई वी. पटेल मोणासा*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

लीलापुर में शाकोत्सव संपन्न

ता. १२-१-०५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हातों से भव्य शाकोत्सव सम्पन्न किया गया । सत्संग सभा का सुंदर आयोजन सम्पन्न किया गया । इस प्रसंग पर अहमदाबाद, मूली, सुरेन्द्रनगार, चराडवा आदि धामों से संत लोग पधारे थे । प्रसंग का संचालन कृष्णवल्लभदासजी ने किया ।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

महाप्रसादीभूत ज्ञानवावे में शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली में महाप्रसादी भूत ज्ञानवावे सुरेन्द्रनगर सत्संग समाज द्वारा प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी मार्गशीर्ष वद-३० को सुंदर शाकोत्सव का आयोजन किया गया । मूली देश के हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित थे । मूली, सुरेन्द्रनगर, धांगध्रां, लीमडी, इत्यादि धामों से विद्वान संत पधारे थे। शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासने प्रसंग का आयोजन किया ।- *शलेन्द्रसिंह झाला*

लखतर गाँव में भागवत सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कोटेश्वर गुरुकुल के पी.पी. स्वामी (नाना) की प्रेरणा से

प.भ. त्रिभोवनभाई परसोत्तमभाई (तीवावाना के यजमान पद पर स.गु. स्वामकृष्णदास के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत पारायण धूम धाम से सम्पन्न किया गया । पोथी यात्रा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव इत्यादि को भी धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर अहमदाबाद, मूली, सुरेन्द्रनगर के संत अपनी अमृतवाणी का लाभ दिये थे ।

ता. १५-११-०४ को प.भ. लालजीभाई शामजीभाई के यजमान पद पर भव्य सत्संग डायरा का आयोजन किया गया था । जिसमें दिनेश वधाशिया, मयंक मोदी, पूरव पटेल, धवल सोनी, इत्यादि कलाकार नंदसंतो द्वारा रचित गीत गांकर आनंदित किये थे । छोटे पी.पी. कथा का लाभ दिये । श्री न.ना. युवक मंडळने आयोजन सुंदर ढंग से किया ।

- पटेल अमृतलाल हिरजीभाई

नाना अंकेवाणिया गांव में सत्संग डायरा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सत्संग द्वारा डायरा का सुंदर आयोजन किया गया । जिस में पूरव पटेल, धवल सोनी, मयंक मोदी, दिनेश वधासिया, इत्यादि कलाकारोंने कीर्तन भक्ति की गीत गाकर सभी को आनंदित किया । छोटे पी.पी. स्वामी प्रसंग का मार्गदर्शन किया । स्वा. रामकृष्णदासने प्रसंगोचित प्रवचन करके सभी को भाव विभोर कर दिया। *- अमृतलाल पटेल लखतर*

हलवद में शाकोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से त्रैमासिक सत्संग सभा तथा शाकोत्सव श्रीजी स्वामी तथा संत मंडल की प्रेरणा से हणवद देश के हरिभक्तों ने किया । जिसमें बहुत सारे हरिभक्तों ने लाभ लिया था ।

- तारखुंदिया रमेशभाई

लीमडी मंदिर

श्री राधाकृष्णदेव के लींबडी श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत बालस्वरूपदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारयणदेव युवक मंडल तथा सभी हरिभक्तों के सहयोग से ता. २७-१२-०४ के दिन भव्य शाकोत्सव तथा ६ घन्टे की धुन की गयी थी । इस प्रसंग पर कृष्णवल्लभदासजीने तथा स्वा. प्रेमवल्लभदासजीने हरिभक्तों को प्रेरणात्मक उपदेश देकर संतुष्ट किये । सां.यो. उषाबा तथा सां.यो. कमलाबाने भी बहनों को सुदर कथा का लाभ दिया था । *- को.स्वा. लीमडी*

तपोवन मंदिर में स्वा. भक्तवत्सलदास की प्रेरणा से शाकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ । जिस में बहुत सारे हरिभक्तों ने भाग लिया था । संतमंडल ने उत्तमसेवा की व्यवस्था की थी ।- *माणेकभाई सोनी*

श्री स्वामिनारायण बालधुनि मंडल मेतपुर

यहाँ पर धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा सं. २०६१ कार्तिक कृष्ण-३० ता. १२-१२-२००४ के कुल ३२ केन्द्रों में परीक्षा ली गयी थी । जिसका जनरल परिणाम ता. १३-१-०५ के दिन वडताल शा.स्वा. देवप्रकाशदासजीने प्रकाशित किया था। १. सत्संग प्रारंभ, २. सत्संग प्रवेश, ३. सत्संग परिचय, ४. सत्संग पारंगत, ५. सत्संग रत्न कुल ११५० में से ९३८ उपस्थित थे । जिसमें से ८१९ उतीर्ण हुए थे । ११९ अनुतीर्ण हुए ते । ८७.३१ प्रतिशत परिणाम रहा ।

- अमृतभाई पटेल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशेलन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री मेतपुर के युवानों की उत्तरोत्तर प्रगति के लिये आशीर्वाद प्रदान करते हैं ।

मूली मंदिर में वसंतोत्सव रंगोत्सव में लाभ लेने पधारे

श्रीहरि के प्यारे भक्तजनों को हर्षोल्लास के साथ बताना है कि सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा प्रतिष्ठित श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में वसंत पंचमी के दिन उत्सव, रंगोत्सव धूम-धाम से मनाया जायेगा ।

ता. १२-२-२००५ को वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर प्रातः ६-३० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराज व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ हाथों से श्री राधाकृष्णदेव श्रीहरिकृष्ण महाराज को षोडशोपचार से महाभिषेक वेद विधिपुरस्सर संपन्न किया जायेगा । बाद में प्रसादी की सभा मंडप में श्री घनश्याम महाराज के सांनिध्य में शिक्षापत्री का पूजन-अर्चन किया जायेगा । हरिभक्तों द्वारा प.पू. आचार्य महाराज का तथा लालजी महाराजका पूजन अर्चन-दर्शन का लाभ सभी को प्राप्त होगा ।

दोपहर में १२-०० बजे लालजी

महाराज श्री रंगोत्सव हेतु मंदिर के चौक में पदार्पण करेंगे । देश विदेश से आये हुए युवा बाल वृंद सभी को कींशुक के रंग से सभी को रंग देगे । इसलिए सभी हरिभक्तों को इस प्रसंग का लाभ लेने का आमंत्रण है । इसके साथ पू. लालजी महाराज के हाथों से रंगोत्सव का लाभा लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है ।

महंत स्वा. लक्ष्मीप्रसाददासजी तथा महंत स्वा. नरेन्द्रप्रसाददासजी का जयश्री स्वामिनारायण

मूली मंदिर में नये महंत स्वामी की नियुक्ति

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजने मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत पद पर स.गु. लक्ष्मीप्रसाददास गुरु स्वामी पुरुषोत्तमचरणदासजी तथा स्वामी नरेन्द्रप्रसाददासजी गुरु लक्ष्मीप्रसाददासजी को ता. १७-१-०५ को नियुक्ति किया है । निवृत्त महंत मुकुन्द स्वामी सेवा दरम्यान सभी की प्रसन्नता प्राप्त की है ।

विदेश सत्संग वृत्तान्त

ओस्ट्रेलिया के सीडनी (I.S.S.O. संस्थापित) शहरमें मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू. बडे महाराजश्री तथा वर्तमान महाराजश्री पूर्व पांच वर्ष से ओस्ट्रेलिया में प्रवास पर पधारते तथा वहाँ के मूल सम्प्रदाय के आश्रितों की संख्या उत्तरोत्तर बढती जा रही है, उस सभी को संकल्प के अनुसार अपने मूल संप्रदाय के आश्रित परिवार के लोगो कें विशेष लाभ मिले इस भाव से वहाँ के सत्संगियो ने दोनो महाराजश्री की प्रार्थना किया जिसके परिणाम स्वरूप वहाँ पर थोड़ी ही समय में हरिभक्तों के संकल्प को सिद्ध करने हेतु महाराजश्री द्वारा मंदिरका निर्माण संभव हो सका । जिसमें कच्छ, गुजरात, सौराष्ट्र के हरिभक्त तन-मन -धन से सेवा कार्य किये । मंदिर का सम्पूर्ण कार्य पूर्व होते ही प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ पू. महंत स्वामी निर्गुणदासजी पार्षद वनराज भगत ओस्ट्रेलिया पधारे । जहाँ अपने हरिभक्त एरपोर्ट पर उत्साहपूर्ण ढंग से संपन्न करके महाराजश्री के साथ संत मंडल को उनके निवास स्थान तक ले गये । प.पू. आचार्य महाराजश्री द्वारा ता. २-१-०५ के शुभ मंगल दिन में ओस्ट्रेलिया के विशाल खंड में सीडनी शहर में I.S.S.O. संस्थापित श्री लक्ष्मीनारायणदेव तथा सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज की प्राण प्रतिष्ठा की गयी । जिसमें मूर्तियो की प्रतिष्ठा षोडशोपचार वेद विधिपुरस्पर की गयी थी । इस प्रसंग का दर्शन करने हेतु सीडनी शहर के प्रत्येक भारतीय एवं गुजराती परिवार के सदस्य बड़ी संख्या मेंउमटे हुए थे । आज सीडनी के हरिभक्तों के वरसों का स्वप्न साकार हुआ । पू. महंत स्वामीने विद्वतापूर्ण भाषा में मूल संप्रदाय की परम्परा तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की महिमा का यथार्थ अवबोधन सरल भाषा में कराया था । अंत में पूज्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद देकर प्रतिदिन मंदिर में आने के लिए सभी को आज्ञा की थी । यहाँ शा.स्वा. गोलोकविहारीदासजी (बद्रीनाथ मंहत) तथा स्वा. हरिस्वरूपदासजी पूर्व से ही सेवा में लगे रहे । प्रसंग पूर्ण करके प.पू. महाराजश्री संतो के साथ पर्थ जाने के लिए प्रयाण किये ।

-शा.स्वा. गोलोकविहारीदासजी

शिकागो मंदिर में प.पू. महाराजश्री का अभूत पूर्व स्वागत

अमेरिका के शिकागो शहर में अपना विशाल मंदिर तथा विशाल संख्या में रहते हुए मूल संप्रदाय के आश्रित श्रीहरिके सातवे वंशज श्री नरनारायणदेव के पीठाधपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आचार्य पद पर प्रस्थापित होने के बाद प्रथमवार अमेरिका की भूमि पर पधारे थे, उस समय वहाँ के हरिभक्तों ने आनंद उल्लास के साथ युवा वर्ग नाचकूद के तथा वृद्ध सतत भगवत नाम स्मरण करके एवं बालकोने काली धेली भाषा में ऐसा स्वागत किया कि, उसमें अनेक सम्प्रदाय के लोग भाग लेने हेतु सम्मिलित हुए थे । आतिश वाजी से रंगवेरंग फटाकडाओं से धरती और आकाश रंगबेरंगी हो गया था । सभी के मन में आनंद समा नहीं रहा था । प.पू. आचार्य महाराजश्री मंदिर में जब पदार्पण किये उस समय मंदिर देदीप्यमान जगमगा रहा था । हरिभक्तोंने प.पू. महाराजश्री के जयनाद से मंदिर को परिपूर्ण कर दिया था । मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर दर्शन करके सभा में विराजमान हुए थे । सर्व प्रथम यहाँ के महंत स्वामी धर्मवल्लभदासजी, प्रेसिडेन्ट श्री जगदीशभाई तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल इत्यादि लोकों ने पुष्पहार

से स्वागत किया था । पश्चात् सभा में पूज्य शा. स्वा. निर्गुणदासजी तथा पी.पी. स्वामी, शा. विवेक, श्री हेपीन, इत्यादिने प्रासंगिक प्रवचन किया । अंत में सभी सभाजन को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया। सभी हरिभक्त अनुशासित ढंग से महाराजश्री के चरणस्पर्श करके धन्यता का अनुभव किया था । धनुर्मास में शास्त्री स्वामी ने भक्तिनिधि की कथा करके तथा ठाकुरजीकी विविध प्रकार थाल का भोग लगाकर तथा श्रृंगार करके दर्शनका दिव्यानन्द प्राप्त करवाया था । - *पूजारी शांतिप्रकाशदासजी*

ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिरमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का शुभागम

ता. २०-१२-०४ के शुभ दिन विश्व के विशाल संप्रदाय के विशाल धर्म के श्रेष्ठ श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री सर्वप्रथम गद्दी पर विराजमान होने के बाद अमेरिका की धरती पर ह्युस्टन शहर के एरपोर्ट पर पधारे उस समय युवक मंडल, कारोबारी कमेटी तथा हजारो हरिभक्तोंने अभूतपूर्व स्वागत करके अपने प्यारे प.पू. आचार्य महाराज को बलैया लिया था । ता. २१-१२-०४ मंगलवार को सायंकाल सात बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की गाजेबाजे के साथ शोभायात्रा निकाली गयी थी । शहर के राजमार्गो पर हरिनाम स्मरण की मंगल ध्वनि से तथा आतिशबाजी से सारा वातावरण गूंज उठा था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री मंदिर मों पधारकर प्रथम ठाकुरजी की आरती करके सभा में विराजमान हुए थे । प.भ. धुवलभाई शाह तथा प्रमुख श्री देवेन्द्रभाई ने सभी हरिभक्तों की तरफ से आरती उतारकर पूजन किया था ।

सभा में पू. महंत स्वामी निर्गुणदासजी तथा पी.पी. स्वामीने बताया कि पूज्य महाराजश्रीने जब से मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा की तब से श्रीहरिकृष्ण महाराज विद्यमान हैं । जिसका परचा सभी को मिलता रहता है । अंत में सभी हरिभक्तों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया । सभी हरिभक्त खूब प्रसन्न हो गये थे । - *रमेशभाई पटेल सेक्रेटरी सांकापुरावाला*

अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद मंदिर : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद के सं.स.गु. शा.स्वा. भगवतप्रसाददासजी गुरुवैद्य स्वामी नरनारायणदासजी मार्गशीर्ष वद-११ के दिन श्रीहरिका स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

कलोल भाल (मूलीदेश) : स.गु. देवानंद स्वामी के बलोल गाँव के अ.नि. प.भ. मोहनभाना पौत्र तथा शक्रिय युवा कार्य कर्ता श्री राधाकृष्णदेव तथा पू. महाराजश्री के परम निष्ठावान सरपचं श्री बलवंतसिंह बालजीभाई परमार श्रीहरिका अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए । यहाँ गाँव में तथा समाजमें बडी कमी हो गयी है । श्रीजी महाराज उनकी आत्माको शांति प्रदान करें ।

सापावाडा ता. ईडर : अहमदाबाद मंदिर के सेवा भावी निष्ठावान एकाउन्टेन्ट प.भ. ईश्वरभाई मोहनभाई पटेल की माताजी अ.सौ. रेवाबहन मोहनभाई पटेल ता. १२-१-०५ को सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का अखंड स्मरण करते हुए श्रीहरि के धाम में पधारे । श्रीहरि उन्हें अपने धाम में सुखिया करे ऐसी प्रार्थना ।

अहमदाबाद टाटानगर : प.भ. गांडाभाई उकाभाई पटेल ता. १-१-०५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

वडनगार : अग्रगण्य हरिभक्त प.प. रणछोडदास जीवरामदास पटेल ता. ५-१-०५ प.भ. सुभोधचन्द्र गणपतलाल भावसार, प.भ. त्रिभोवनदास कुवेरदास मोदी श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं । श्रीजी महाराज उनके परिवारजनोंको विरहसहन करने की शक्ति प्रदान करें ।

प्रांतिज : प.भ. हीराबहन बबलदास मोदी ता. २५-१-०५ को तथा प.भ. रोहितकुमार रसिकलाल मोदी (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सभ्य) ता. २७-१२-०४ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद : अपने मंदिर के प्रेस मैनेजर श्री मोहनभाई राजपूत की माताजी दीवाली बा ता. १७-१२-०४ को प्रभुका स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई है ।

मोरबी : गं.स्व. रतनबहेन बेलजीभाई काचा ता. १४-१-०५ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

जमीयतपुरा मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलों से संपन्न हुई ।



अंबाजी में शिबिर संत-हिरभक्तो के साथ दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ।





जमीयतपुरा मंदिर में यज्ञकी पूर्णाहुति करते प.पू.ध.धु. आचार महाराजश्री और यजमान प.भ. दशरथभाई पटेल लाभ लेते हुए ।

अंबाजी शिबिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीका पूजन करते हुए प.भ. हरिकिशनभाई ठक्कर और परिवारजन ।





धमासणा मंदिर में शाकोत्सव का वधार

श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप में शाकोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्

सीडनी मंदिर में कथा पारायणकी आरती उतारते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और साथमें मुख्य यजमानश्री देवराजभाई हालारीया और श्री खीमजीभाई वाघजीयाणी ।



सीडनी मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी उपस्थिति में शोभायात्रा धामधूम पूर्वक संपन्न हुइ ।

Praful Kharsani